चीन में बौद्धिक विचार व चार मई का आन्दोलन

[INTELLECTUAL IDEAS IN CHINA AND MAY FOURTH MOVEMENT]

चीन में बौद्धिक विचार

चीन की क्रान्ति के जनक डॉ. सुनयात सेन ने चीन की क्रान्ति के लिए बौद्धिक एवं क्रान्तिकारी पृष्ठभूमि तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। डॉ. सेन ने चीन की दुर्दशा का मूल कारण मांचू वंश को मानकर उसके उन्मूलन के लिए क्रान्तिकारी संस्था **'सिंग चुंग हुई'** (Hsing Chung Hui) की स्थापना की। 1905 ई. में इसी संस्था का पुनर्गठन करके **'तुंग-मेंग हुई'** (Tung meng Hui) नामक संगठन बनाया, जिसने चीन में बौद्धिक विचारों को प्रचारित-प्रसारित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

1905 ई. में चीन में प्राचीन परीक्षा पद्धति की समाप्ति एवं आधुनिक शिक्षा की महत्ता में अनेक चीनी विद्यार्थियों को विदेशों में विद्या के अध्ययन के लिए प्रेरित किया। **इसके साथ ही पश्चिमी सम्पर्क में आने के बाद शासकों व व्यापारियों के साथ ही ईसाई मिशनरियों ने भी चीन में पदार्पण किया।** अतः ये ईसाई मिशनरियां भी अच्छे, प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को विदेशों में पढ़ाई के लिए भेजती थीं। वहां की शिक्षा, शासन पद्धति एवं रहन-सहन का उन विद्यार्थियों पर गहरा प्रभाव पड़ा। उनको पश्चिमी सभ्यता के समानता, स्वतन्त्रता एवं बन्धुत्व के सिद्धान्तों ने प्रभावित किया। **अतः इन विद्यार्थियों ने चीन की स्थिति का विदेशों की स्थिति से तुलनात्मक अध्ययन प्रारम्भ कर दिया।** इसी परिप्रेक्ष्य में 1898 ई. में जापान में **'ताओ दो बुन काइ'** की स्थापना हुई। इसका मूल उद्देश्य चीन की समस्याओं का अध्ययन करना था।

छियांग छी-छाओ ने पश्चिमी सभ्यता का अध्ययन कर 1898 ई. में **'छिंग ई-पाओ'** तथा 1902 में **शिन मिन त्सुंगपाओ'** नामक पत्रिकाएं प्रकाशित कीं। थांग त्साह छांग ने होनान में **'त्सु-ली-हुई'** नामक संस्था की स्थापना की। डॉ. सुनयात सेन ने 'तुंग मेंग हुई' नामक जिस दल का गठन किया, उस दल ने स्पष्ट किया कि चीन में क्रान्ति आवश्यक है। लि शू ने स्कॉट, वाल्जाक एवं डिफेंस के नामक विदेशी लेखकों की कृतियों का अनुवाद चीनी भाषा में किया। येन फू ने **आन लिबर्टी, दि स्प्रिट ऑफ लॉज** एवं **इवोल्यूशन** खण्ड **इथिक्स** को अनुवादित किया। 19वीं शताब्दी के अन्त तक चीन में समाचार-पत्रों का प्रकाशन भी आरम्भ हो गया था। **छापेखाने के सर्वप्रथम चीन में आविष्कार ने मुद्रण कार्य को द्रुतगति से बढ़ा दिया था।** इस प्रकार पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति के आलोक में चीन में बौद्धिक जागरण का जो एक वेग प्रारम्भ हुआ उसने चीन में क्रान्तिकारी वीज बोने में अहम् भूमिका निभाई।

1911 ई. की चीनी क्रान्ति ने चीन में परिवर्तनों का दौर प्रारम्भ कर दिया। चीन का बुद्धिजीवी वर्ग अब अपने अधिकारों के प्रति सजग हो गया था। अतः 1911 ई. की चीनी क्रान्ति के बाद चीन तथा विश्व

की परिस्थितियों में कुछ ऐसे परिवर्तन हुए जिसने मई आन्दोलन की भूमिका तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

4 मई का आन्दोलन

चीन ने प्रथम विश्वयुद्ध में सीमित रूप से शामिल होते हुए 1917 ई. में जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी, लेकिन उसने फ्रांस, इराक और अफ्रीका में केवल श्रमिक संघों को भेजने तक ही अपने को सीमित रखा। जर्मनी के द्वारा 18 जनवरी, 1919 ई. को आत्मसमर्पण करने के पश्चात् पेरिस में शान्ति सम्मेलन का आयोजन हुआ। चीन व जापान भी इस शान्ति सम्मेलन में शामिल हुए। **चीनी प्रतिनिधिमण्डल में लू-चेंग-हसिआंग, हूबी-वे, बी. के वेलिंगटन कू., हाकलिंग एल. येन साओ-के. अल्फ्रेड स्जे और वांग चेंग-तिंग शामिल थे।** चीनी प्रतिनिधिमण्डल को आशा थी कि चीन पश्चिमी ताकतों के चंगुल से मुक्त हो सकेगा और अपनी आकांक्षाओं को पूरा करने में स्वयं ही समर्थ हो सकेगा, परन्तु चीनियों के पास कोई अपनी योजना नहीं थी। उन्हें अपने नागरिकों की आकांक्षाओं का भी आभास नहीं था। **अतः वे जापानी चक्रव्यूह में फंसकर निन्दा के पात्र बन गए।** जापान सरकार द्वारा 7 मई, 1915 ई. के दिन प्रस्तुत 21 मांगें जो चीन की अखण्डता व सम्प्रभुता पर एक चोट थी। चीन के गले की हड्डी बना हुआ था। **जापान ने चीन की आर्थिक कमजोरियों का लाभ उठाकर अपनी सेना को चीन में तैनात कर लिया था** तथा अवैध रूप से त्सिंगटाओ को अपने कब्जे में कर लिया। अतः पेरिस शान्ति सम्मेलन में जापान को शांतुंग क्षेत्र में स्थित जर्मनी के क्षेत्रों को जापान को सौंप दिया गया। **फलस्वरूप चीनी जनमानस में सुलग रही चिंगारी को इस क्षेत्र ने भड़काने का काम कर दिया।** 1919 ई. में पीकिंग में छात्रों ने जापान-विरोधी प्रदर्शन किया। 4 **मई, 1919 ई. को राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की अगुवाई में हजारों छात्रों के समूह ने शांतुंग के प्रश्न पर विरोध प्रदर्शित करने के लिए विशाल धरना दिया।** उन्होंने जापानी दूतावास के सामने जमकर प्रदर्शन किया और चीनी सरकार व प्रतिनिधिमण्डल को चीन को जापान के हाथों में गिरवीं रखकर बेचने का आरोप लगाया। छात्रों ने चीनी संचार व परिवहन मन्त्री साओ-जू-लिन के घर पर प्रदर्शनकारियों ने हमला बोल दिया। जिसमें लिन घायल हो गया, बाद में उसकी मृत्यु हो गई। सरकार ने प्रदर्शनकारियों पर दमन चक्र चला दिया। 32 छात्रों को मृत्यु-दण्ड दिया गया और कई गिरफ्तार कर लिए गए। सभाओं तथा जुलूस पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। **छात्रों मर हुए इस दमनकारी कदम से पूरे देश में आन्दोलन फैल गया और व्यापारी तथा आम जनता भी इस आन्दोलन में शामिल हो गए।** 7 मई, 1915 ई. की अपमानजनक सन्धि की चौथी वर्षगांठ पर **'राष्ट्रीय अपमान दिवस'** का आयोजन पीकिंग में किया गया। अन्त में सरकार को विद्रोहियों के आगे झुकना पड़ा और परिणामस्वरूप चीन ने 1919 ई. की वर्साय की सन्धि पर हस्ताक्षर नहीं किया। बन्दी छात्रों को मुक्त कर दिया गया इसी आन्दोलन का यह प्रभाव रहा कि वाशिंगटन में 1921-22 ई. में सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें चीन को समुचित सम्मान मिल पाया।

जापान द्वारा की जा रही अनुचित मांगों व चीन में तेजी से फैल रही बौद्धिक जागृति ने इसको फैलाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। चीन के औद्योगिक विकास के फलस्वरूप गठित होने वाले संगठित श्रमिक समूहों की जागरूकता ने भी इस आन्दोलन को उग्र बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस आन्दोलन के माध्यम से जापानी वस्तुओं के वहिष्कार के साथ-साथ स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग पर भी जोर दिया गया।

4 मई के आन्दोलन के चीन के जनमानस पर व्यापक प्रभाव हुए अब तक इसके पहले जितने भी बौद्धिक आन्दोलन हुए थे, वे केवल कुछ लोगों तक ही सीमित थे, किन्तु इस आन्दोलन को छात्रों द्वारा प्रारम्भ करने के वाद इसमें सामान्य जनता और सामाजिक संगठनों तथा श्रमिकों की सहभागिता ने सरकार को यह दिखा दिया कि चीनी जनता अब मूकदर्शक बनकर चीन के अपकर्ष को बर्दास्त नहीं कर सकती है। चीन में प्रारम्भ हुए इस बौद्धिक आन्दोलन ने जापान को रूढ़िगत परम्पराओं के बन्धन को तोड़कर एक स्वाभिमानी राष्ट्र की निर्माण की नींव रख दी।